

## प्रलिमिंस फैक्ट्स : 19 जनवरी, 2021

- [इंडोनेशिया का सेमरू ज्वालामुखी](#)
- [पश्चिमी विकिस्रोत](#)

### Semeru Volcano of Indonesia

#### इंडोनेशिया का सेमरू ज्वालामुखी

हाल ही में इंडोनेशिया के पूर्वी जावा प्रांत में स्थित सेमरू ज्वालामुखी (Semeru Volcano) में वसिफोट हुआ है। इंडोनेशिया में स्थित अन्य ज्वालामुखी जनिमें [मेरापी ज्वालामुखी](#) (जावा) और [सुमात्रा ज्वालामुखी](#) (सुमात्रा) शामिल हैं, में कुछ समय पूर्व ही वसिफोट हुआ था।

#### प्रमुख बद्दु:

##### सेमरू ज्वालामुखी:

- सेमरू- जसै "द ग्रेट माउंटेन" के रूप में भी जाना जाता है जावा का सबसे उच्चतम ज्वालामुखी शखर है तथा सर्वाधिक सक्रयि ज्वालामुखियों में से एक है।
- इसमें अंतमि बार दसिंबर, 2019 में वसिफोट हुआ था।
- इंडोनेशिया में वशिव के सक्रयि ज्वालामुखियों की सर्वाधिक संख्या होने के साथ-साथ इसके [पैसफिकि रगि ऑफ फायर](#) (Pacific's Ring of Fire) में अवस्थति होने के कारण यहाँ भूकंपीय उथल-पुथल का खतरा भी बना रहता है।
- सेमरू ज्वालामुखी भी सुंडा प्लेट (यूरेशियन प्लेट का हसिसा) के नीचे स्थति इंडो-ऑस्ट्रेलियाई प्लेट के उप-भाग के रूप में नरिमति द्वीपीय चाप (Island Arcs) का हसिसा है। यहाँ नरिमति खाई को सुंडा खाई के नाम से जाना है जावा खाई (Java Trench) इसका प्रमुख खंड/भाग है।

##### पैसफिकि रगि ऑफ फायर:

- रगि ऑफ फायर, जसै [सर्कम-पैसफिकि बेल्ट](#) (Circum-Pacific Belt) के रूप में भी जाना जाता है, सक्रयि ज्वालामुखियों और लगातार आने वाले भूकंपों के कारण प्रशांत महासागर में नरिमति एक मार्ग है।
- यह प्रशांत (Pacific), कोकोस (Cocos), भारतीय-ऑस्ट्रेलियाई (Indian-Australian), नाज़का (Nazca), उत्तरी अमेरिकी (North American) और फिलीपीन प्लेट्स (Philippine Plates) सहति कई टेक्टोनिक प्लेटों के मध्य एक सीमा का नरिधारण करती है।



## द्वीपीय चाप:

- ये तीव्र ज्वालामुखीय और भूकंपीय गतिविधियाँ तथा ओरोजेनिक (पर्वत-निर्माण) प्रक्रियाओं से जुड़े समुद्री द्वीपों की लंबी, घुमावदार शृंखलाएँ हैं।
  - एक द्वीपीय चाप में सामान्यतः एक लैंड मास (Land Mass) या आंशिक रूप से संलग्न उथला समुद्र शामिल होता है।
  - उत्तल क्षेत्र के साथ हमेशा एक लंबी, संकीर्ण गहरी गर्त/खाई वदियमान होती है।
  - समुद्र के इन गहरे क्षेत्रों में सबसे बड़ी एवं गहरी महासागरीय गर्त पाई जाती है जिसमें मारयाना (दुनिया की सबसे गहरी खाई) और टोंगागर्त शामिल हैं।
- भूगर्भिक विशेषता के इन प्रारंभिक उदाहरणों में **अलेउतियन-अलास्का गर्त** (Aleutian-Alaska Arc) और **कुरील-कामचटका गर्त** (Kuril-Kamchatka Arc) शामिल हैं।

## Western Disturbance

### पश्चिमी वकिषोभ

**भारत मौसम वजिज्ञान विभाग** ( India Meteorological Department-IMD) के अनुसार, **पश्चिमी वकिषोभ** (Western Disturbance- WD) के कारण शीघ्र ही हिमालय क्षेत्र के प्रभावित होने की संभावना है।

- वकिषोभों के परिणामस्वरूप जम्मू के मैदानी इलाकों में हल्की से मध्यम बर्फबारी और बारिश हो सकती है।

### प्रमुख बदि:

- पश्चिमी वकिषोभ को भूमध्य सागर में उत्पन्न होने वाले एक **'बहुरिषण उष्णकटबिंधीय तूफान'** के रूप में चिह्नित किया जाता है, जो एक नमिन दबाव का क्षेत्र है तथा उत्तर-पश्चिमि भारत में अचानक वर्षा, बर्फबारी और कोहरे के लिये ज़िम्मेदार है।
- **पश्चिमी वकिषोभ का अर्थ इसके नाम में ही नहिति है:**
  - पश्चिमी वकिषोभ की दिशा 'पश्चिमि' से 'पूर्व' की ओर होती है।
    - ये हाई अल्टीट्यूड पर पूर्व की ओर चलने वाली **वर्सटली जेट धाराओं** (Westerly Jet Streams) के साथ यात्रा करते हैं -
  - वकिषोभ का तात्पर्य 'वकिषुबध' क्षेत्र या कम हवा वाले दबाव क्षेत्र से है।
    - प्रकृति में संतुलन मौजूद है जिसके कारण एक क्षेत्र में हवा अपने दबाव को सामान्य करने की कोशिश करती है।
- "बहुरिषण कटबिंधीय तूफान" शब्द में तूफान कम दबाव के क्षेत्र को संदर्भित करता है तथा "अतिरिक्त उष्णकटबिंधीय"का अर्थ है उष्णकटबिंधीय के अतिरिक्त। चूँकि पश्चिमी वकिषोभ की उत्पत्ति उष्णकटबिंधीय क्षेत्र से बाहर होती है, इसलिये "बहुरिषण कटबिंधीय" शब्द उनके साथ जुड़ा हुआ है।
- पश्चिमी वकिषोभ का संबंध उत्तरी भारत में वर्षा, बर्फबारी और कोहरे से जुड़ा हुआ है। इसके कारण पाकिस्तान और उत्तरी भारत में वर्षा और बर्फबारी होती है। पश्चिमी वकिषोभ अपने साथ लाने वाली नमी को भूमध्य सागर और/या अटलांटिक महासागर से ग्रहण करते हैं।
- सर्दियों में होने वाली वर्षा और प्री-मॉनसून वर्षा पश्चिमी वकिषोभ के कारण होती है जो उत्तरी उपमहाद्वीप क्षेत्र में **रबी की फसल** के विकास के लिये महत्वपूर्ण होती है।
- पश्चिमी वकिषोभ हमेशा ही अच्छे मौसम के सूचक नहीं होते हैं। ये बाढ़, **भूखलन**, धूल भरी आँधी, ओलावृष्टि, **शीत लहर** से लोगों की मृत्यु, बुनियादी ढाँचे की क्षति तथा आजीविका को प्रभावित करने वाली चरम मौसमी घटनाओं का कारण भी बन सकते हैं।
  - पश्चिमी वकिषोभ के संदर्भ में विशेषज्ञों की राय उत्तराखंड में आई वर्ष 2013 की बाढ़ के संबंध में अलग है, जिसमें तीन दिनों तक लगातार वर्षा के बाद 5000 से अधिक लोग मारे गए थे।